B-2
Lec-06
Ancient History

सिंधु घाटी सभ्यता

मूर्तियां

मूर्तियां पत्थर, कांसे एवं मिट्टी की बनी होती थी, परन्तु संख्या की दृष्टि से काफी कम थी, फिर भी कला की दृष्टि से यह उच्चकोटि की है।

* हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से प्राप्त मूर्तियां त्रिआयामी (3D) कला का अनूठा उदाहरण है।
* मोहनजोदड़ो से एक दाढ़ी वाले आदमी की प्रतिमा मिली है, जो संभवतः धार्मिक व्यक्ति प्रतीत होता है। यह प्रतिमा शॉल ओढ़े है, जो बाएं कंधे से होकर दाहिने कंधे तक जा रहा है इस पर त्रिपतिया अंकन है। यह प्रतिमा ध्यान की मुद्रा में है, जिसमे आधी आंख खुली हुई है। बालो के बीच में मांग है और एक पट्टी (फीते) से बालो को बांधा गया है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

कांसे की मूर्तियां — सैंधव सभ्यता के लोग कांसे की ढलाई बड़े पैमाने पर करते थे और इस विधा में प्रवीण थे।

* कांसे की मूर्तियां बनाने के लिए लुप्त मोम तकनीक का प्रयोग किया जाता है।
* कांसे की मूर्तियां मानव व पशु दोनों की होती थी।

* मानव मूर्ति का सर्वोत्तम नमूना मोहनजोदड़ो से प्राप्त कांसे की नर्तकी की मूर्ति है। नर्तकी के हाथ में कांसे की चूड़िया है।
* एक दूसरी तकनीक का प्रयोग धातु की मूर्तियां बनाने में किया जाता था, जिसे सायर पड्यू तकनीक कहा जाता था। इस तकनीक के अंतर्गत धातु की चादर पर चित्र बनाकर काट लिया जाता है।
उदा. लोथल से प्राप्त चिड़िया, खरगोश, कुत्ता और बैल का चित्र
* एक अन्य तकनीक का प्रयोग मूर्तिकला में किया जाता था इसे पिंच प्रेशर तकनीक या चिकोटी विधि कहा जाता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES

टेराकोटा (मिट्टी की मूर्तियां / खिलौने)

सैंधव सभ्यता के लोग मिट्टी की मूर्तियां भी बनाते थे परन्तु यह पत्थर और कांसे की मूर्तियों की तुलना में सुंदर नहीं होते थे।

सैंधव सभ्यता में मातृदेवी की मूर्तियां उल्लेखनीय है

* कालीबंगा और लोथल मे पाई गई नारी मूर्तियां मोहनजोदड़ो से प्राप्त मूर्तियो से काफी अलग थी।
* मिट्टी की मूर्तियों मे छोटी-2 दाढ़ी मूछ वाली पुरुषों की मूर्तियां मिली है जिनके बाल गुथे हुए हो। ऐसा प्रतीत होता है कि ये मूर्तियां किसी देवता की प्रतीक है।

* एक सींग वाले देवता के मुख का मुखौटा मिला है।
* मिट्टी के पशु-पक्षियों की आकृतियां, खिलौने, पासे की मूर्तियां आदि मिली हैं

मृदभांड

सैंधव सभ्यता से बड़ी संख्या में प्राप्त मिट्टी के बर्तनों की आकृति और बनाने की शैली से तत्कालीन डिजाइनों के भिन्न रूपों तथा विषयों के विकास का पता चलता है।

* अधिकतर बर्तन कुम्हार के चाक पर बनाए गये हैं।
* अधिकतर बर्तन सादे हैं रंगे बर्तन कम हैं। इन सादे बर्तनों को बनाने के लिए सामान्यतः लाल चिकनी मिट्टी का उपयोग हुआ है। कुछ बर्तन घुण्डीदार हैं।
* काले रंगीन बर्तनों पर लाल रंग की सुंदर परत है जिस पर ज्यामितीय आकृतियां एवं पशुओं के चित्र अंकित हैं।
* बहुरंगी मृदभांड बहुत कम पाये गए हैं। इनमें छोटे-2 कलश शामिल हैं, जिन पर लाल, काले, हरे, सफेद एवं कभी-कभी पीले रंग से डिजाइन बनाए गये थे
* सिंधु घाटी सभ्यता के मृदभांड काले एवं लाल मृदभांड (BRR pottery) कहलाते हैं।

KGS IAS

आभूषण

* सैंधव सभ्यता के लोग आभूषण के शौकीन थे और यह पुरुष एवं महिलाओं द्वारा समान रूप से उपयोग में लाये जाते थे।
* यह आभूषण बहुमूल्य धातुओं, रत्नों, हड्डी आदि के बने होते थे।
* हार, बाजूबंद, करधनी, कर्णफूल, पैरों के कड़े, पैजनियां, झुमके, वलय इत्यादि उपयोग में लाए जाते थे।
* हरियाणा मे फरमाना पुरा स्थल से एक शवाधान पाया गया है जिसमे आभूषणों के साथ शव को दफनाया गया है।

मनके (Beads)

* चन्हूदड़ो और लोथल से हमे मनके बनाने के उद्योग का साक्ष्य मिलता है।
* कार्नेलियन, जमनियां, स्फटिक, सूर्यकांत, कांचमणि, सेलखड़ी, फिरोजा, लाजवर्द मणि आदि के बने होते थे।
* तांबा, कांसा, सोना, शंख, सीपी आदि का भी उपयोग मनके बनाने में किया जाता था।
* मनके कई प्रकार के होते थे तश्तरीनुमा, बेलनाकार, ढोलकाकार आदि कई खंडों में विभाजित होते थे।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- → सैंधव सभ्यता के घरों में बड़ी संख्या में तकुए एवं तकुआ चक्रियाँ मिली है।
- → सैंधव सभ्यता के लोग साज-श्रृंगार और फैशन के प्रति जागरूक थे जैसे- केश सज्जा।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR IAS